© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

महाभारत की द्रौपदी, आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

अरूणा यादव
शोधच्छात्रा
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

शोध आलेख सार– सम्पूर्ण गुण–दोषों से परिपूर्ण एक ऐसी नारी का चरित्र है, जो जटिल एवं विसंगतियों से पूर्ण आधुनिक युग में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। वर्तमान नारी जगत यदि प्रमाद, मोह और आसक्ति आदि दुर्गुणों का त्यागकर द्रौपदी के चरित्र का अनुकरण करेंगी तो स्वयं के कल्याण में तो सन्देह ही क्या है, अपितु परिवार एवं समाज को भी सुखमय कल्याणप्रद मार्ग पर अग्रसर कर सकेगीं।

मुख्य शब्द– प्रमाद, मोह, आसक्ति, नारी, मर्यादा, अर्द्धांगिनी, रामायण, महाभारत।

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आर्य पुरुष ने सदा ही उसे अपनी अर्द्धांगिनी स्वीकार किया है, इतना ही नहीं, व्यवहार में पुरुष मर्यादा से नारी मर्यादा सदा ही उत्कृष्ट मानी गयी है। रामायण, महाभारत आदि भारतीय इतिहास ग्रन्थों और पुराणों में पातिव्रत्य के प्रभाव से त्रिकालदर्शना, सिद्धि सम्पन्ना अनेक नारियों के उदाहरण मिलते हैं, यथा–सती सावित्री, देवी सीता, अनसूया, सुलभा, अरून्धती, गार्गी, मैत्रेयी द्रौपदी, गान्धारी इत्यादि। नारियों के प्रति इन्हीं विचारों का पोषण महर्षि वेदव्यास कृत वृहदाकाय ग्रन्थ महाभारत में भी हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र महाभारत में वर्णित द्रौपदी के चरित्र का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता पर आधारित है।

महाभारत के पात्रों का जगत इस जगत से पृथक नही हैं, उनके जीवन की गति भी सामान्य मनुष्य के जीवन से कोई विशेष भिन्न नहीं हैं। महाभारत की नायिका द्रौपदी तथा नायक युधिष्ठिर है। महर्षि व्यास ने नारी के जिन आदर्श गुणों का चित्रण इस ग्रन्थ में किया है, उनसे समाज आज भी प्रेरणा ग्रहण कर रहा है। द्रौपदी के चरित्र में मुख्य रूप से पातिव्रत्य धर्म, अपराधी को दण्डित करने की वृत्ति, अदम्य साहस, निर्भीकता, विवेकशीलता प्रमुख गुण तथा कतिपय नारी

सुलभ दुर्बलताएँ भी परिलक्षित होती हैं। द्रौपदी के चरित्र की प्रासंगिकता को सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों के आधार पर उल्लिखित किया जा सकता है।

सामाजिक संरचना के सन्दर्भ में–

द्रौपदी का विवाह अर्जुन से होता है, परन्तु माता कुन्ती के अज्ञानतावश दिये आदेशानुसार उन्हें पांचो पाण्डवों की पत्नी बनना पड़ता है।[1] उस समय प्रचलित बहुपतित्त्व प्रथा के विरूद्ध द्रापैदी की आवाज सुनायी नहीं पड़ती, तथापि विचारणीय है कि ऐसी विषम परिस्थिति में भी द्रौपदी अपने पतियों में एकनिष्ठ प्रेम स्थापित कर जीवन को सुचारू रूप से संचालित करती है। इसके विपरीत स्वयंवर सभा में उपस्थित कर्ण जब लक्ष्यवेध के लिए आगे बढ़ता है, तो भरी सभा में द्रौपदी उच्च स्वर में कहती हैं–मैं सूतजाति के पुरुष का वरण नहीं करूँगी।[2] इस प्रकार द्रौपदी उपर्युक्त प्रसंग में निर्भीक एवं साहसी नारी के रूप में प्रशंसनीय है। आधुनिक सन्दर्भ में भी विवाह संबंधी निर्णय लेने में नारी कुछ अर्थो में पराधीन है तो कुछ अर्थो में स्वाधीन है तथापि परिवर्तन हुआ है। विवाह सम्बन्धी निर्णयों पर नारियाँ अपना स्वर बुलन्द करने लगी है।

द्रौपदी द्यूतसभा के चीरहरण प्रसंग में असाधारण धैर्य एवं सहनशीलता का परिचय देती है। द्यूतसभा में उनके प्रश्नों के सामने भीष्म, द्रोणाचार्य, गुरुकृपाचार्य धृतराष्ट्र सभी निरुत्तर हो जाते हैं।[3] इस संकटकालीन परिस्थिति में भी द्रौपदी शिष्टाचार नहीं भूलती तथा सभा में उपस्थित सभी कुरुवंशियों का अभिवादन करती है। अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर न केवल अपने सभी पतियों को दुर्योधन के दासत्व से मुक्त कराया अपितु इन्द्रप्रस्थ का राज्य भी युधिष्ठिर को वापस दिलाया।[4] यह दुःख और शर्म का विषय है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व भी नारी छेड़छाड़ तथा बलात्कार की शिकार थी और वह आज भी स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करती। इन घटनाओं में अधिकांशतः दोस्त, परिवारीजन, रिश्तेदार, किरायेदार सहकर्मी इत्यादि सम्मिलित रहते हैं, तथापि इन घटनाओं के नियन्त्रण हेतु सुविचारित एवं योजनाबद्ध कानून बनाये गये हैं। द्रौपदी यदि प्रतिशोध की अग्नि में जल रही थीं, कौरवों को उनके घोर अपराध के लिए दण्डित करना चाहती थीं, तो ऐसा होना स्वाभाविक था।

पारिवारिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में–

द्रौपदी का विवाहोपरान्त का जीवन कटु–अनुभवों से व्याप्त है, तथापि पाण्डवों की पत्नी बनने के पश्चात् वह आदर्श गृहिणी का निर्वहन भली–भांति करती है। प्रथम दिन से ही पाण्डवों के साथ कुम्हार की कुटिया में रहने लगती हैं, अपने पिता के गृह में दास–दासियाँ उनकी सेवा में थी, विवाह के पश्चात्–राजसी वैभव का वह जीवन एक स्वप्न बन जाता है। युधिष्ठिर को इन्द्रप्रस्थ का राज्य मिला और वह महारानी बनती है, लेकिन यह भी स्थायी नहीं रहता। जुए में युधिष्ठिर सब कुछ हार जाते है तथा द्यूतसभा में उन्हें अपमानित होना पड़ता है, बारह वर्षो तक द्रौपदी को अपने पतियों के साथ वनवास भोगना पड़ता है। अज्ञातवास के एक वर्ष में उन्हें सैरन्ध्री बनकर छद्मवेश में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

द्रौपदी के चरित्र में आदर्श पतिव्रता नारी के गुण भी है। सिन्धु नरेश जयद्रथ तथा महाराज विराट के श्याले कीचक ने द्रौपदी को पटरानी बनाने का लोभ देकर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया, लेकिन दोनों ही व्यक्ति विफल हुए। जहाँ सिन्धु नरेश जयद्रथ को अपमानित होना पड़ा, वहीं कीचक को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। वस्तुतः सिन्धु नरेश जयद्रथ द्रौपदी के पास उस समय गये थे, जब वह वन में कष्टमय जीवन व्यतीत कर रही थी तथा कीचक ने द्रौपदी को प्राप्त करने का प्रयत्न उस समय किया था, जब वह एक सामान्य सैरंध्री का कार्य कर रही थी। पतिव्रत–धर्म के सामने द्रौपदी ने सभी चमत्कारपूर्ण विकल्पों को ठुकरा दिया। ऐसा आदर्श यदि आधुनिक नारी के सन्दर्भ में अंगीकार कर लिया जाय तो पारिवारिक विघटन एवं विवाह–विच्छेद जैसी समस्या पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

इसी तरह द्रौपदी–सत्यभामा कथोपकथन पर्व में[5] अपने सुखी दाम्पत्य जीवन का रहस्य बताते हुए सत्यभामा से कहती हैं–पति के स्नेह पर कभी सन्देह नहीं करना चाहिए, उन्हें वश में करने के लिए मन्त्र–तन्त्र तथा जड़ी–बूटियों के प्रयोग को असती स्त्रियों का कार्य कहती है तथा ऐसा करने पर पुरुष के रोगग्रस्त, अंधा, नपुंसक तथा गूंगा–बहरा होने के कतिपय उदाहरण मिलते है।

द्रौपदी द्वारा कही गयी बातें आज भी सुखी वैवाहिक जीवन के लिए उपादेय है। द्रौपदी कहती है कि मैं सदा काम, क्रोध और अंहकार को त्याग कर सपत्नियों सहित पाण्डवों की प्रयत्नपूर्वक सेवा करती हूँ।

- प्रमाद एवं आलस्य रहित होकर सावधानीपूर्वाक गृहकार्य सम्पन्न करती हूँ।
- दास–दासियों के होने पर भी सभी कार्यो का निरीक्षण स्वयं करती हूँ।
- पाण्डवों का रूचिकर कार्य करती हूँ, अरूचिकर नहीं, कभी पतियों से पहले खाती नहीं, सोती नहीं और सदा पहले जगती हूँ।[6]

शास्त्रों में स्त्रियों के लिए जिन कर्त्तव्यों का उपदेश किया गया है, उन सबका नियमपूर्वक पालन करती हूँ। द्रौपदी मानती है कि पति के आश्रय में रहना ही स्त्रियों का धर्म है। पति ही उनका देवता है, पति ही उनकी गति है, पति के सिवा नारी का दूसरा कोई सहारा नही हैं।[7] मैं श्वश्रूमाता की कभी निन्दा नहीं करती और न ही उनकी सेवा में प्रमाद करती हूँ।

- जो स्त्री अपने पति की बात को गुप्त नहीं रख सकती, वह पति का विश्वास खो बैठती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि द्रौपदी नारी–धर्म का कर्त्तव्य बताते हुए सत्यभामा के माध्यम से वर्तमान नारी जगत को सन्देश देते हुए कह रही हो कि पतिभक्ति एवं सेवा ही मेरा वशीकरण मन्त्र है।[8]

द्रौपदी द्वारा कहीं गयी उपर्युक्त बातें आज के युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी प्राचीन काल में थी।

राजनीतिक पक्ष के सन्दर्भ में–

द्रौपदी राजनीति की कसौटी है। उनकी बुद्धिमत्ता समय–समय पर अपने शक्तिशाली विचारों द्वारा अभिव्यक्त हुई है। द्वैतवन में निवास करते हुए द्रौपदी युधिष्ठिर से पुरुषार्थ की महत्ता बताते हुए कहती हैं कि–क्षत्रिय को समय आने पर अपने प्रभाव को दिखाना चाहिए नहीं तो वह तिरस्कार का पात्र होता है। शत्रुओं के प्रति किसी प्रकार का क्षमाभाव नहीं रखना चाहिए तेज से ही उनका वध किया जा सकता है।[9] कर्म करने वाले पुरुष को यहाँ प्रायः फल की सिद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो आलसी है जिससे ठीक–ठीक कर्तव्य का पालन नहीं हो पाता, उसे कभी फल की सिद्धि नहीं प्राप्त होती। इस प्रकार द्रौपदी वनवास काल में युधिष्ठिर को आलस्य त्यागकर कर्मपरायण होने की प्रेरणा देती है।[10]

द्रौपदी स्वाभिमानिनी नारी है, उनके हृदय में अपराधी को दण्डित करने की अदम्य जिजीविषा सदा विद्यमान रहती है। द्यूतसभा में हुए अपने अपमान को कभी नहीं भूलती, इस अपमान की अग्नि उनके हृदय में सदैव प्रज्वलित रहती है, इस प्रकार जब–जब उनके सामने कौरवों से समझौता करने की बात आयी, तब–तब द्रौपदी ने इसका मुखर विरोध किया तथा अपने पतियों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती रही। तेरह वर्षो तक अपने हृदय में प्रचण्ड क्रोध को धारण करने वाली द्रौपदी प्रतिशोध भाव से कहती है कि यदि भीमसेन और अर्जुन कायर होकर कौरवों के साथ संधि की कामना करते हैं, तो मेरे वृद्ध पिताजी अपने महारथी पुत्रों के साथ युद्ध करेंगें।[11]

द्रौपदी द्वारा कही गयी बातें वर्तमान नारी जगत के सन्दर्भ में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जो महिलायें अपने प्रति हुए दुष्कृत्य के लिए अदालतों, कोर्ट, कचेहरियों में अपने हक के लिए लम्बी लड़ाईयाँ लड़ती है ऐसी पीड़ित महिलाओ के लिए द्रौपदी प्रेरणास्त्रोत है, जो अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए हार नहीं मानती, अपराधी को किसी भी प्रकार से दण्डित करने की इच्छा रखती है। वर्तमान समय में भी राजनीति के क्षेत्र में नाम रोशन करने वाली नारियाँ है, जिन्होंने अपनी राजनीतिक प्रतिभा के बल पर अपना स्त्रीत्त्व ही नहीं पुरुषत्त्व भी प्रकाशित किया है। यथा–मायावती, इन्दिरा गांधी, प्रियंका गांधी, ममता बनर्जी, मीरा कुमार, सुषमा स्वराज आदि, जो अपनी राजनीतिक प्रतिभा के बल पर राष्ट्र निर्माण में अतुलनीय योगदान दे रही है।

धार्मिक पक्ष के सन्दर्भ में–

विपत्ति में पड़कर भी कभी धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए, इस विषय में महाभागा द्रौपदी का चरित्र पद–पद पर श्लाघनीय है। द्यूतसभा में धृतराष्ट्र जब द्रौपदी को तीसरा वर देने की इच्छा प्रकट करते है, तो द्रौपदी उसे लेना अस्वीकार करते हुए कहती है–कि लोभ धर्म के नाश के लिए होता है तथा क्षत्रिय की स्त्री को केवल दो वर मांगने का अधिकार होता है।[12] इसी

प्रकार द्यूतसभा में सभी नरेशों को फटकार लगाते हुए कहती है कि भरतवंश के नरेशों का धर्म निश्चय ही नष्ट हो गया तथा क्षत्रिय धर्म के जानने वाले इन महापुरुषों का सदाचार लुप्त हो गया हैं, क्योकि यहाँ कौरवों की धर्ममर्यादा का उल्लंघन हो रहा है, तो भी सभा में बैठे हुए कुरुवंशी चुपचाप देख रहे हैं।[13] द्रौपदी सभासदों की ओर दृष्टिपात करते हुए आवेश में कहती हैं कि – मेरे इस प्रश्न का सभी सभासद उत्तर दें–धर्म के अनुसार मैं जीती गयी हूँ या नहीं?[14] द्रौपदी के प्रश्नों का द्यूतसभा में उपस्थित कोई भी सभासद उत्तर नहीं दे पाता। इसी प्रकार शांतिपर्व में भी वह युधिष्ठिर को राजदण्ड धारण कर पृथ्वी का शासन करने के लिए प्रेरित करती हुई कहती हैं–आपको यह पृथ्वी न तो शास्त्रों के श्रवण से मिली है, न दान में प्राप्त हुई है, न कहीं भीख मांगने से प्राप्त हुई है, यह पृथ्वी आपके अधिकार में आयी है, अतः एक वीर की तरह आप इसका उपभोग करें। धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करते हुए आप पृथ्वी का शासन कीजिए।[15]

इससे स्त्रियों को यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि स्वधर्म का पालन ही श्रेयस्कर है जैसा कि गीता में कहा गया है–धर्म त्यागकर प्राण रहने में कोई लाभ नहीं, परन्तु प्राण त्यागकर धर्म रहने में ही कल्याण है–स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।[16]

द्रौपदी बड़ो की सेवा और श्वश्रू–श्वसुर, माता–पिता के आज्ञापालन को अपना धर्म समझती थीं। इसीलिए द्रौपदी पुत्रवधू के कर्त्तव्य से कभी विमुख नहीं हुई। महाभारत युद्ध के उपरान्त राजप्रसाद में निवास करती हुई द्रौपदी कुन्ती की भांति गान्धारी की भी सेवा–सुश्रूषा समान भाव से करती थीं, जिनके पुत्रों द्वारा उनका नारीत्व अपमानित एवं लांछित हुआ, जिनके कारण उनको वनवास, अज्ञातवास एवं न जाने कितने कष्टों को सहना पड़ा तथा जिनके कारण विशाल महाभारत युद्ध हुआ, उन्हीं कौरवों की माता गान्धारी के प्रति उनके हृदय में कोई कलुषता नहीं रहती। श्वश्रू और बहू का ऐसा व्यवहार आदर्श है। भारतीय नारियाँ यदि आज द्रौपदी के इस आचरण को व्यवहार में लाना सीख जायें, तो गृहस्थ जीवन सब प्रकार से सुखी हो सकता है।

द्रौपदी (याज्ञसेनी) पांचाल नरेश की यज्ञकुण्ड से उत्पन्न प्रभावशालिनी पुत्री तथा उस समय के प्रसिद्ध हस्तिनापुर राज्य की पुत्रवधू थी, तथापि उनका जीवन काँटो भरा था। वनवास व अज्ञातवास के कष्टों को झेलने के अतिरिक्त उन्हें दो बार अपहरण की परिस्थिति से जूझना पड़ता है तथा भरी कुरु–सभा में अपमानित किया जाता है। महाभारत युद्ध में उन्हें अपने पिता, भाई तथा पुत्रों के जीवन की आहुति देनी पड़ती है, उनके जीवन की अन्तिम यात्रा भी सुखमय नहीं थी, स्वर्गगमन के समय वह सबसे पहले ही मार्ग में गिर गयी। इतना सबकुछ होते हुए भी द्रौपदी के सन्तुलन एवं स्थापन की दृढ़ता पद–पद पर प्रशंसनीय है।

द्रौपदी का चरित्र अपने सम्पूर्ण गुण–दोषों से परिपूर्ण एक ऐसी नारी का चरित्र है, जो जटिल एवं विसंगतियों से पूर्ण आधुनिक युग में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। द्रौपदी में आदर्श सुगृहिणी, पतिव्रता, बुद्धिमती एवं दूरदर्शिता, तेजस्विता, क्षमाशीलता एवं दयालुता, स्वाभिमानिनी एवं धैर्यशीलता आदि सभी गुण पूर्ण विकसित और सर्वथा अनुकरणीय है। वर्तमान नारी जगत यदि प्रमाद, मोह और आसक्ति आदि दुर्गुणों का त्यागकर द्रौपदी के चरित्र का

अनुकरण करेंगी तो स्वयं के कल्याण में तो सन्देह ही क्या है, अपितु परिवार एवं समाज को भी सुखमय कल्याणप्रद मार्ग पर अग्रसर कर सकेगीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाभारत, आदिपर्व 194/23
2. महा0आदिपर्व 186/23
3. महा0सभापर्व (67/40)
4. महा0सभापर्व 71/28–33
5. महा0वनपर्व 233/1–48
6. महा0वनपर्व 233/1–24
7. महा0वनपर्व 233/37
8. महा0वनपर्व 233/58
9. महा0वनपर्व 27/38–40
10. महा0वनपर्व 32/40–43
11. महा0उद्योगपर्व 82/37–40
12. महा0सभापर्व 71/34–35
13. महा0सभापर्व 67/40
14. महा0सभापर्व 67/41
15. महा0शांतिपर्व 14/18–32
16. गीता 3/35